Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

विधि के अन्तर्गत पर्यावरण संरक्षण एवं इससे जुड़ी स्वदेशी ज्ञान परंपराऐं

गरीमा राठौर*

* सहायक प्राध्यापक, शासकीय विधि महाविद्यालय, अशोकनगर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – पर्यावरण यानि हमारे चारों और मौजूद ऐसा वातावरण जिसमें मनुष्य, जीव, जन्तु और वनस्पति जो कि एक दूसरे पर आश्रित हैं। पर्यावरण की रक्षा अनंत काल से वेदों, पुराणों और उपनिषदों में की गई है भारतीय ज्ञान परम्पराओं के अन्तर्गत व्यक्ति को हमेशा पर्यावरण संरक्षण के लिए आधार माना गया है। प्राचीन काल में व्यक्ति की दिनचर्या में पर्यावरण संरक्षण को कार्य एवं पर्यावरण संरक्षण को एक विचार माना गया। जिससे व्यक्ति एक स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सके और स्वस्थ शरीर एवं स्वास्थ मन के लिए हमारे चारों ओर का वातावरण भी अच्छा होना चाहिए। इसलिए भारतीय ज्ञान परम्पराओं के द्वारा व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण से कई प्रकार से जोड़ा गया। जैसे-जैसे समय बीतता गया पर्यावरण संरक्षण में जब व्यक्ति के द्वारा स्वदेशी परम्पराऐं तोड़ी जाने लगी तो पर्यावरण विधि का जन्म पर्यावरण के लिए एक कारगर हथियार साबित हुआ। जिससे व्यक्ति को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया जा सके। इसलिए पर्यावरण संरक्षण के लिए विधि की उपयोगिता और भारतीय ज्ञान परम्पराओं दोनो का महत्त्व सर्वोपरि है। हम अपने इस शोध में दानों का ही अध्ययन करेंगे।

शब्द कुंजी – पर्यावरण, विधि, कानून, नियम, संरक्षण, संस्कृति, वातावरण, व्यक्ति, परंपराऐं, प्राचीन।

प्रस्तावना – 'भारतीय परम्परा ही हमारा विचार है।
इसी से ही होता पर्यावरण संरक्षण का विस्तार है।
प्राचीन से लेकर वर्तमान तक
हम ऐसी परम्पराऐं निभाऐंगे
कि पर्यावरण विधि के रूप
पर्यावरण को बचाऐंगे'

पर्यावरण संरक्षण क्या है ?

पर्यावरण के शब्द में यह ध्वनि होता है कि 'परि' एवं 'आवरण' से मिलकर 'पर्यावरण' शब्द का जन्म हुआ। 'परि' अर्थात् चारों ओर एवं आवरण यानि घेरा। मतलब पर्यावरण प्रकृति की ऐसी संरचना है, जो कि हमारे चारों तरफ एक आवरण की तरह है। इसके अन्तार्गत जैविक और अजैविक यानि मृदा, जल, वायु तथा रसायन, पौधे, पशु तथा सूक्ष्मय जीवाणु आते है और इन्हीग सभी चीजों के संरक्षण को जो स्थलमण्डल, वायुमण्डल एवं जलमण्डल से मिलकर बना है, इसी को पर्यावरण संरक्षण कहा जाता है। इसी के अन्तर्गत विधिक पर्यावरण की बात की जाए, तो विधिक पर्यावरण का आशय उन कानूनों, नियमों, विनियमों और नीतियों से है जो कि किसी देश, राज्य या समाज में व्यवसायिक गतिविधियों, व्यक्तिगत व्यवहार और सामाजिक संबंधों को नियंत्रित करता है।

'हम सब मिलकर पर्यावरण से हाथ मिलाऐंगे
हर रोज अपना कुछ समय पर्यावरण संरक्षण में लगाऐंगे'

पर्यावरण संरक्षण वर्तमान के साथ प्राचीन भारत से भी एक गंभीर विषय रहा है यदि हर व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण के लिए अपना कुछ समय देता है, तो हम धीरे-धीरे सतत् प्रयास के द्वारा पर्यावरण के लिए एक अच्छे साधनों को खोज पाऐंगे। प्रति व्योक्ति का यह कर्त्तव्य है, कि पर्यावरण संरक्षण के लिए अपने स्तर पर प्रयास करें क्योंकि व्यक्ति से ही समाज बनता है और समाज से राज्य और राज्यों से देश का निर्माण होता है। हर स्तर पर इसकी भूमिका इतनी महत्त्वपूर्ण है। छोटे-छोटे प्रयासों के द्वारा व्यक्ति जागरुकता के साथ पर्यावरण संरक्षण कर सकता है। पर्यावरण संरक्षण आज की दुनिया का गंभीर एवं महत्त्वपूर्ण विषय है। पर्यावरण संरक्षण के लिए बड़े स्तर पर प्रयास के साथ छोटे-छोटे स्तर पर भी प्रयास किया जाना चाहिये। पर्यावरण संरक्षण सिर्फ मनुष्य जाति के विकास के लिए ही नहीं बल्कि हर प्रकार के जीव जन्तु और वनस्पति के लिए भी अत्यंत आवश्यक है क्योंकि हम सभी एक आवरण में बंधे हुए हैं। हमारे लिए एक दूसरे के साथ पर्यावरण में रहना आवश्यक है, जिससे कि पारिस्थिति के अनुकूल हो।

आज के इस विषय में पर्यावरण संरक्षण भारत के पुनरुत्थान के लिए एक महत्त्वपूर्ण विषय है। भारत में हजारों प्रकार के जीव जन्तु एवं वनस्पति है, जिसके लिए पर्यावरण को समय-समय पर संरक्षित किया गया है। भारत का विकास मनुष्य के द्वारा और मनुष्य के स्वस्थ मन एवं शरीर का विकास पूर्णत: पर्यावरण पर निर्भर है।

पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी विधियों – पर्यावरण को बचाना न सिर्फ हमारी नैतिक जिम्मेदारी है, बल्कि यह हमारी विधिक जिम्मेदारी भी हो गई है। भारत हमारा पहला देश है, जिसने पर्यावरण संरक्षण को भारत में संविधान के अंतर्गत मूलभूत कर्तव्य में शामिल किया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 48 ए में यह प्रावधान है, कि राज्य देश के पर्यावरण संरक्षण तथा सुधार और वनों तथा वन्य जीवन की रक्षा करने का प्रयास करेगा।

वहीं अगर भारतीय संविधान के अंतर्गत मौलिक कर्तव्य की बात की जाए तो अनुच्छेद 51 ए यह कहता है, कि भारत के हर नागरिक का एक कर्तव्य होगा, कि वह नदियों तथा वन्य जीवन सहित प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण

सुधार करें और सभी सजीव प्राणियों के प्रति करुणा का भाव रखें।

पर्यावरण संरक्षण को एक वैश्विक समस्या मानी गई है और एक जिम्मेदारी भी मानी गई है। पर्यावरण से जुड़ी वैश्विक चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए 1972 में स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण के संबंध में संयुक्त सम्मेलन हुआ, जिसमें 113 देशों ने भाग लिया।

इसके आगे अगर भारतीय संविधान की बात की जाए तो संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची के अंतर्गत भी पर्यावरण में काफी चीजों को बताया गया है। जैसे कि संघ सूची के 56 वां शीर्षक अंतरराष्ट्रीय नदियों और नदी घाटियों के निर्माण से संबंधित है, वही 57 वां शीर्षक राज्य क्षेत्रीय सागर खंड में मछली पकड़ने से संबंधित है, वही हम राज्य सूची के विषय की अगर बात करते हैं, तो 14 वां शीर्षक में कृषि कीड़े सुरक्षा पौधों की बीमारियों को बताया गया है, 17वीं शीर्षक में जलप्रपात, सिंचाई नहर, जल विकास गठबंधन आदि चीजों को बताया गया है। समवर्ती सूची की अगर बात करें तो 17 ए में वनों को स्थान दिया गया है, 17बी के अंतर्गत वन्य पशु एवं पक्षियों को संरक्षण प्रदान किया गया है।

पर्यावरण और कानून का संबंध बहुत ही पुराना है। पर्यावरण के लिए पहले भी स्वतंत्रता से पूर्व कई नियम बनाए गए थे और उसके बाद भी गए कानून बनाए गए इनमें से एक कानून पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 है, जो कि वर्ष 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन के बाद भारत में यही नियम लागू किया गया। इसमें पर्यावरण से जुड़ी हर चीजों को लाया गया। इसकी सबसे खास बात यह है कि कोई भी व्यक्ति अधिनियम का अगर उल्लंघन करता है तो उसके विरुद्ध मुकदमा लाया जा सकता है और सक्षम अधिकारी को भी सूचित किया जा सकता है।

वहीं पर्यावरण संरक्षण में अगर हम बात करें तो वायु प्रदूषण निरोध एवं नियंत्रण अधिनियम 1981 लाया गया जो की वायु प्रदूषण से संबंधित था। जिनमें कंपनियों द्वारा जो वायु प्रदूषण फैलाया जाता है या गाड़ियों को इसमें शामिल किया गया। इस अधिनियम के अंतर्गत धारा 20 के तहत मोटर वाहन रजिस्ट्रेशन प्राधिकारी राज्य सरकार को यह अधिकार है कि वह मोटर वाहनों से निकलने वाले खतरनाक पदार्थों को नियंत्रित करें।

वहीं पर्यावरण संरक्षण में अगर बात करें तो वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम 1972 लाया गया जिसके अंतर्गत जंगली जानवरों को संरक्षण प्रदान किया गया और राष्ट्रीय उद्यानों और राष्ट्रीय पार्क को अभ्यारण की देखभाल की गई और इसके अंदर रहने वाले जीव जंतुओं को सुरक्षा प्रदान की गई और उनके लिए कड़े से कड़े कानून बनाए गए।

पर्यावरण संरक्षण के लिए जल प्रदूषण निरोध एवं नियंत्रण अधिनियम 1974 भी लाया गया, जिसमें जल के भौतिक रासायनिक अथवा जैविक गुना को किसी भी प्रकार के द्रव गैस पदार्थों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होने वाली अशुद्धियां सभी को ध्यान रखा गया और यह देखा गया कि क्या जल प्रदूषण किसके द्वारा फैलाया जा रहा है और उसके लिए एक दंड की व्यवस्था भी की गई।

पर्यावरण संरक्षण के लिए पर्यावरण से संबंधित विवादों को निपटागन के लिए राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण की स्थापना की गई इस नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल भी कहा जाता है इसका मुख्यालय भोपाल बनाया गया।

पर्यावरण संरक्षण एवं भारतीय ज्ञान परम्पीराऐं – पर्यावरण संरक्षण एवं भारतीय ज्ञान परंपराएं का संबंध एक दूसरे से बहुत ही अटूट है। यदि हम पर्यावरण की संरक्षण के लिए मानव जाति की बात करें, तो यह मानव जाति प्राचीन काल से आज वर्तमान तक पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य कर रही है। यह पर्यावरण संरक्षण कहीं वेदों, उपनिषदों और यजुर्वेदों, रामायण काल आदि युगों में रहा है। प्रकृति मनुष्य की परंपरा ही नहीं बल्कि संस्कृति भी है, जो कि हमारी रोजमर्रा के जीवन से जुड़ी रीति रिवाज में शामिल हो गई है। जैसे तुलसी विवाह, आम के वृक्ष की पूजा, आंवला नवमी जिसमें आंवला वृक्ष की पूजा की जाती है, आदि सभी रीति रिवाज न सिर्फ हमें मन और तन की ताजगी देते हैं, बल्कि प्रकृति की संरक्षण में भी मदद करते हैं। हमने इतिहास के पन्नों को भी देखा कहीं ना कहीं पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण हमारा सकारात्मक ही मिला है। सिंधु सभ्यता के युग में आर्यों की जीवन शैली ने पर्यावरण प्रेम को दर्शाया है। वह विशेष रूप से वृक्ष पूजा करते थे। आर्यों के द्वारा प्रारंभ की गई यह प्रक्रिया एवं परंपरा बाद में भी जीवित रही। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में अभ्यारण की पांच श्रेणियां होती थी, चंद्रगुप्त के समय वन की भी सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता था, सम्राट अशोक के शासनकाल में सर्वप्रथम वन्य जीवों के संरक्षण हेतु नियम बनाए गए थे और उसके पश्चात भी सिलसिला चलता ही रहा।

भारतीय ज्ञान परंपरा में पर्यावरण को अत्यधिक महत्व दिया गया है, जहां वेदों और उपनिषदों की बात की जाती है, वही साधु संतों के द्वारा पर्यावरण से जुड़ी बातें मिलती हैं। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण के लिए कई प्रथाओं का जन्म हुआ कई प्रथाएं पुरानी थी और साथ में कहीं रीति रिवाज भी पर्यावरण संरक्षण से जुड़े हुए हैं। जैसे कि हम आपको बताएं कि मानव जाति के लिए हर त्यौहार कहीं ना कहीं पर्यावरण के संरक्षण को दर्शाता है। वेदों में पर्यावरण के महत्व उनकी रक्षा के प्रति जागरूकता को दर्शाया गया है। वह हमारे लिए एक बहुत बड़ा आधार है, कि प्राचीन काल में हमारी शिक्षा इन वेदों पर ही निर्भर थी। हमारी शिक्षा के अंतर्गत वेदों के द्वारा हमें पर्यावरण की सुरक्षा के नियम बताए गए थे। वेदों में वायु को प्राण वायु कहा गया है और वायु संरक्षण की बात बताई गई है, इसलिए वेदों में अंतरिक्ष में आने वाली पराबैंगनी एवं अन्य जहरीली गैस से पृथ्वी को कैसे बचाया जा सकता है, कहीं ना कहीं इनका भी उल्लेख मिलता है। वेद हमारे लिए एक महत्वपूर्ण आधार है।

भारतीय संस्कृति में वृक्षों को पूज्य माना गया है। जैसे कि हम कहें तो पीपल का पेड़ जिनकी पूजा की जाती है, वट वृक्ष, तुलसी का पेड़, बीलपत्र जो की शिवजी को चढ़ाए जाते हैं, जिससे कि अन्य और भी वृक्ष है, जैसे आंवले का वृक्ष इन सभी वृक्षों की पूजा की जाती है, साथ ही जलवायु अग्नि इनको भी देवता स्वरूप माना गया है। समुद्र और नदी का भी पूजन करने का रिवाज प्राचीन काल से ही हमारे भारत में माना गया है। नदियों की पूजा हम इसलिए किया करते हैं क्योंकि नदियों का स्वच्छ पानी हमें पीने के काम और खेती करने के काम में आता है, इसलिए नदियों को स्वच्छ रखना हमारा दायित्व है इसलिए नदियों की पूजा हम करते हैं। जैसे की नदियों में गंगा, सिंधु, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, नर्मदा आदि नदियां हैं, जिनका उल्लेख हमें आर्यों के काल में भी देखने को मिलता है। इन्हीं सब की पूजा की जाती है। धरती को भी धरती माता का दर्जा दिया गया है, जिससे कि व्यक्ति जहां रह रहा है वहां को स्वच्छ रखें। पुराने काल में जब व्यक्ति गुरुकुल में पढ़ाई किया करते थे, तो वह अपनी रोज दिनचर्या का कुछ समय पर्यावरण संरक्षण को दिया करते थे। पर्यावरण संरक्षण का पाठ इसलिए उन्हें पढ़ाया जाता था जिससे कि व्यक्ति अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रख सके और सकारात्मक सोच का जन्म हो सके क्योंकि ऐसा माना जाता है कि अगर हम

अपने आसपास का वातावरण प्रदूषित रखते हैं, तो हमारे मन में विचार भी प्रदूषित ही आते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा को पर्यावरण से जोड़ने के लिए यह बहुत ही आवश्यक है, कि हम कुछ ऐसे कार्य करें जिससे हमारे भारतीय ज्ञान परंपरा को एक नई दिशा मिल सके। जैसे कि हमें वृक्षारोपण लगातार करते रहना चाहिए, प्रकृति मैं वन संरक्षण करते रहना चाहिए, पर्यावरण के लिए जागरूकता फैलानी चाहिए, स्कूल के स्तर पर बच्चों के क्लासेस में पर्यावरण संरक्षण को लेकर हमेशा एक विषय होना चाहिए, पर्यावरण दिवस के अंतर्गत हमें हर साल कार्यक्रम आयोजित करवाने चाहिए।

प्राचीन भारतीय परम्पराओं में पर्यावरण संरक्षण – प्राचीन भारतीय परम्पराओं में पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्त्वपूर्ण बुनियाद भारत के तपस्वियों, ऋषियों, मुनियों द्वारा रखी गई और इन्हें समय समय पर आगे हमारे राजाओं और सम्राटों के द्वारा बढ़ाया गया। प्रकृति हमारे लिए पूजनीय थी। प्राचीन काल से आज भी कई जगहों पर प्रकृति को देवता और उससे जुड़ी चीजों की पूजा की जाती है क्यों कि उनका मानना है कि यही हमारे जीवन को संरक्षित करती है। हमने स्वयं को प्रकृति व पर्यावरण का हिस्सा माना और परंपराओं के विकास के साथ सूर्य, जल, पर्वत, सागर, नदियों, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु एवं वनस्पतियों आदि को पूज्य, माना है। हमारी लोक संस्कृति एवं तीज – त्यौहार एवं हर चीज में पर्यावरण की झलक देखने को मिलती है, जैसे :-

- हमारे यहां बसंत महोत्सव जिसे ऋतुओं का राजा कहते हैं।
- हमारे यहां वेदों में पर्यावरण संरक्षण एवं सिद्धांत पाए जाते हैं।

'प्रकृति रक्षति रक्षिता'

- अथर्ववेद के अन्तकर्गत भूमिसूक्तव में

अरण्यंर ते पृथिवी स्योरनमस्तुं
मातरम् औषधीनाम
मा ते मर्म विमृग्वपरि मा ते हृदयमर्पितम्।

(अर्थात् है भूमि, तेरे वन हमारे लिए सुखदायी हो। भूमि तेरे वृक्षों को मैं इस तरह काटूं कि वे शीघ्र ही पुन: अंकुरित हो जाए। भूमि को औषधियों की माता माना गया है।)

- राजस्थान के बिस्नोंई समाज के द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए किए गए कार्य सराहनीय हैं।
- पर्यावरण संरक्षण के अन्तोर्गत प्राचीन काल की परम्पराओं में जैव विविधता देखी गई है, जिसके अन्तरर्गत जीव जन्तुत का संरक्षण भी सर्वोपरि माना गया है। भारत के आदिवासी क्षेत्रों में जीव जन्तुत, वृक्ष एवं वनस्पति को आज भी पूजा जाता है।
- हमारे भारतीय दर्शन में पर्यावरण को ईश्वर के प्रतिरूप के रूप में सम्मानित व संरक्षणीय माना गया है और तैत्तरीयोपनिषद में कहा गया है 'ईश्वरीय आत्मा से आकाश की, आकाश से वायु की, वायु से अग्नि की और अग्नि से जल तथा जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। पृथ्वी ने वनस्पति उपजाई, अन्न दिया और मानव जाति सहित असंख्य जीव जन्तु को पैदा किया। इस सृष्टि में प्रत्येक जीव जंतु की अहम भूमिका है।
- पर्यावरण संरक्षण के प्रति हम प्राचीनकाल से अत्यंत सजग और चेतन रहें। इस संदर्भ में यजुर्वेद की इन पंक्तियों का उल्लेख आवश्यक है।

'वनाना पतये नम'
वृक्षाणां पतये नम'
औषधीनां पतये नम'
अरण्यांनां पतये नम'

ऋषि मुनियों के द्वारा भी समय समय पर पर्यावरण को एक शांति एवं विकास का प्रतीक बताया गया है। कहा जाता है जहाँ पर पर्यावरण संरक्षण होता है वहाँ मनुष्य का विकास निरंतर होता है, वहाँ वायु, जल और स्थल इतने स्वच्छ होते हैं कि वह व्यक्ति को सकारात्मक सोच का प्रादुर्भाव होता है जिससे व्यक्ति निरंतर विकास की ओर अग्रसर होता है। पर्यावरण संरक्षण आज से नहीं बल्कि प्राचीन काल से ही व्यक्तियों के द्वारा किया जा रहा है। जो कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक पूजा के रूप में या कार्य का एक भाग होता था जिससे उन्हें जीवन में जीने के लिए एक स्वच्छ वातावरण मिले।

निष्कर्ष – पर्यावरण में रह रहे मनुष्य के लिए पर्यावरण संरक्षण एक गंभीर मुद्दा है। यदि हमने पर्यावरण को संरक्षण प्रदान नहीं किया, तो हम मनुष्य को भी संरक्षण प्रदान नहीं कर पाएंगे। आने वाली परिस्थितियों के लिए मनुष्य ही जिम्मेदार होगा। प्राचीन ज्ञान परंपराओं में पर्यावरण संरक्षण को लेकर जो नियम बनाए गए थे, यह सिद्धांत थे, पर बहुत ही प्रभावशाली थे। जैसे- जैसे जनसंख्या बढ़ना शुरू हो गई और व्यक्ति सकारात्मक सोच की बजाय नकारात्मकता की ओर अग्रसर होने लगा, वहां पर पर्यावरण संरक्षण की जगह पर्यावरण का दोहन होने लगा।

भारत के पुनरुत्थान के लिए पर्यावरण का विषय एक बहुत ही अच्छा विषय है। यह विधि के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण कैसे किया जाता है और इसमें स्वदेशी ज्ञान परंपराओं की भूमिका किस प्रकार है। यदि हम एक विकसित भारत की कल्पना करते हैं, तो हमारे लिए मानव जाति के विकास के लिए पर्यावरण का संरक्षण बीच महत्वपूर्ण विषय है। पर्यावरण संरक्षण पुराने काल में कुछ ऐसी परंपराओं के साथ किया जाता था, कि उसका केंद्र बिंदु मनुष्य के साथ जीव जंतु वनस्पति की रक्षा करना होता था। इसलिए भारत के पूर्व स्थान के लिए अत्यधिक आवश्यक है, की विधि के साथ पर्यावरण संरक्षण एवं स्वदेशी ज्ञान परंपराओं का भी ध्यान रखा जाए। क्योंकि मानव जाति के विकास के साथ ही देश यानी भारत का विकास सुनिश्चित है और मानव जाति के लिए उसके पद पद पर विकास के लिए पर्यावरण संरक्षण एक आवश्यक प्रक्रिया है। जो कि स्वस्थ मन के साथ स्वस्थ मनुष्य को जन्म देती है, जिससे व्यक्ति बेहतर तरीके से भारत के पूर्व स्थान में योगदान देगा। जल, जीवन, मनुष्य, वनस्पति यह सब पर्यावरण संरक्षण का एक भाग है, जिससे निश्चित ही भारत का पुनरुत्थान होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी (परीक्षा मंथन : अनिल अग्रवाल)
2. पर्यावरणीय विधि (चुनौतियाँ, विश्लेषण और भविष्य : अनूप कुमार और प्रो. बी.सी. निर्मल)
3. पर्यावरण एवं पर्यावरण संरक्षण विधि की रूपरेखा (डा. अनिरूद्ध प्रसाद)
4. पर्यावरण अध्ययन (मोतीलाल बनारसीदास)
5. पर्यावरण एवं पारिस्थिति (माजिद हुसैन)
6. इंटरनेट
7. न्यूजपेपर लेख जनसत्ता (पर्यावरण की खातिर)
8. पर्यावरण : भारत सरकार (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय नई दिल्ली : लेखक आर. के. गुप्ता, ऋचा शर्मा)
9. ENN : Environment News Network
10. पर्यावरण पत्रिका : पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की हिन्दी पत्रिका